

25 खेलना मिट्टी के संग

सुमन्त सम्पत

कला के सभी रूपों का अनुभव करना बच्चे के लिए महत्त्वपूर्ण है, फिर भी मिट्टी की बनी हुई एक पूर्ण वस्तु/कलाकृति बच्चे के लिए एक विशेष महत्त्व रखती है।

वैसे तो भारत भर के कई स्कूलों ने कला के पाठ्यक्रम को अपनाया है। लेकिन कला को पाठ्येतर विषयों के दायरे में रखा जाता है और इस बात की या तो बहुत कम समझ होती है या बिलकुल समझ नहीं होती कि कला बच्चे के समग्र विकास को कैसे प्रभावित करती है। शिक्षा को पूर्णतावादी होना चाहिए और कला बच्चों की समग्र संवृद्धि और विकास के लक्ष्य को पाने का एक अभिन्न हिस्सा है।

एक कलाकार और सिरामिक शिक्षक के होने के नाते मैं यह कह सकता हूँ कि जिस तरह से मिट्टी की कला बच्चों में विकास और कौशल को बढ़ाती है वैसा कला के कुछ ही माध्यम कर पाते हैं। मैंने अपने मिट्टी के बर्तन बनाने वाले स्टूडियो में कई सालों तक बच्चों को यह काम सिखाया है और यह देखा है कि संवेदी विकास, गत्यात्मक कौशल, आत्म–सम्मान और आत्म–अभिव्यक्ति, समस्या को सुलझाने के कौशल तथा अनुशासन और गर्व की भावना के लिए मिट्टी के साथ काम करने का अनुभव कितना अमूल्य है।



जब बच्चे कुम्हार के चाक पर पहली बार काम करने बैठते हैं और अपने गीले हाथ धीमे–धीमे घूमती हुई मिट्टी पर रखते हैं, तब उनके चेहरे पर जो खुशी दमकती है, उसे देखना मेरे लिए एक सर्वश्रेष्ठ पल होता है। जब वे मिट्टी की बनावट और स्पर्श का अनुभव करते हैं तब वे अपने अनुभव को बेझिझक उत्साह के साथ इस प्रकार व्यक्त करते हैं, “यह ठण्डा है, यह गीला और लुगदी जैसा है, और यह कितना भारी है!” मिट्टी चाहती है कि उसे कोंचा जाए, मसला जाए,तोड़ा–मरोड़ा जाए, रगड़कर गोल किया जाए और जब बच्चे इसके साथ काम करते हैं तो इस प्रकार के सूक्ष्म और महत्त्वपूर्ण संचालन कौशल विकसित होते हैं। जब मिट्टी उनके संचालन की प्रतिक्रिया स्वरूप नए रूप लेती है तब उन्हें यह एहसास होता है कि मिट्टी पर उनका प्रभाव पड़ता है। बच्चे अपनी आँखों से मिट्टी की सतह और रंग का निरीक्षण करते हैं, उसे सूँघते हैं। जब गीली मिट्टी में से तरह–तरह की आवाजें आती हैं तो वे बहुत खुश हो जाते हैं। कई बच्चों के लिए तो शायद यह पहला मौका होता है जब उन्हें कक्षा में गीले या गन्दे होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और इस आजादी के लिए वे एक सहज और प्रेरक प्रतिक्रिया दिखाते हैं। उनकी बनाई हुई वस्तु जब बनकर तैयार हो जाती है और वे उसे घर ले जाने वाले होते हैं तब वे बड़े प्यार से उसे गोद में लेकर घूमते हैं, आग में तपी हुई सतह पर उँगलियाँ फिराते हैं और बार–बार उसे उलट–पलटकर उसका निरीक्षण करते रहते हैं।

मिट्टी कला का अनूठा माध्यम है क्योंकि यह स्पर्श के लिए अति संवेदनशील है। जैसे ही बच्चों को मिट्टी दी जाती है, वैसे ही वे उसे ढालना और आकार देना शुरू कर देते हैं। क्योंकि जैसे ही वे अपनी उँगलियाँ चलाना शुरू करते हैं वैसे ही मिट्टी प्रतिक्रिया दिखाने लगती है। जब उनके भीतर यह भावना जागती है कि मिट्टी की कमान अब उन्होंने सम्भाल ली है, तो उन्हें किसी भी प्रोजेक्ट को आत्मविश्वास के साथ करने की प्रेरणा मिलती है जिससे उनकी आत्माभिव्यक्ति और कल्पना और अधिक बढ़ती है। मिट्टी बच्चों को इस बात की अनुमति भी देती है कि वे गलतियों को ठीक करना सीखें और चूँकि गलतियाँ सुधारी जा सकती हैं इसलिए उन्हें गलतियाँ करने से डरना नहीं चाहिए। आत्म सुधार के लिए गलतियाँ करना जरूरी है पर कुछ बच्चों के लिए यह बात कठिन हो सकती है और बाधा भी बन सकती है। मिट्टी की प्रकृति की वजह से बच्चे में अपनी गलतियों को तत्परता से ठीक करने की क्षमता विकसित होती है। उदाहरण के लिए एक कक्षा में एक बच्चा अपने प्रोजेक्ट यानी एक टूथब्रश होल्डर पर दो घण्टे से काम कर रहा था जो बॉल प्लेयर जैसा दिख रहा था। सजावट करते समय अचानक उसने उसके एक तरफ छेद कर दिया। वह स्तब्ध रह गया। जब मैंने उसे बताया कि वह थोड़ी सी मिट्टी लेकर उस छेद में भर दे तब उसने अचानक मेरे हाथ से मिट्टी ले ली और कहा, “ये तो मैं खुद ही कर सकता हूँ!” उसने उसे ठीक कर लिया और बड़े जोश से उसे सजाने में जुट गया।

मिट्टी कला के अन्य माध्यमों से अलग है, इसमें त्रिआयामी दुनिया को समझने की आवश्यकता है। हम अपने कार्यक्रमों में अक्सर बच्चों को ऊँचे चाक पर काम करने को प्रोत्साहित करते हैं या उनसे कहते हैं कि वे अपनी सीट से उठकर चाक की दूसरी तरफ जाएँ ताकि वे अपने बनाई हुई चीज को हर तरफ से देख सकें। वे आकार, रूप और परिप्रेक्ष्य को समझना शुरू कर देते हैं और इससे उन्हें ज्यामिति में एक अन्तर्दृष्टि मिलती है। बच्चे अपने चारों ओर की दुनिया को वास्तव में जानने और देखने लगते हैं और उस दुनिया में अपनी जगह तलाश लेते हैं। अपने त्रिआयामीय प्रोजेक्ट को करते हुए वे नियोजन के तरीके और समस्या को सुलझाने का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। बच्चों को बस प्रोत्साहन और योजना बनाने के लिए जरा–सी मदद की जरूरत होती है। उदाहरण के लिए जब हमें बेलनाकार बनाना होता है तब पहले हम मिट्टी के चपटे आयताकार टुकड़े से काम शुरू करते हैं। विद्यार्थी मेज पर रखे हुए उस टुकड़े को सजाते और डिजाइन करते हैं। तब हम उनसे पूछते हैं कि हम इस चपटे आयताकार टुकड़े का इस्तेमाल एक खड़े हुए फूलदान को बनाने में कैसे कर सकते हैं। जब वे समझ जाते हैं कि उस टुकड़े को घुमाकर बेलन का आकार कैसे देना है तब यह बात हमें बहुत बढ़िया लगती है और कुछ बच्चे तो ऐसे भी होते हैं जो यह भविष्यवाणी करते हैं कि, “अब हमें इसके लिए एक आधार चाहिए!”

मिट्टी के साथ काम करते समय कुछ नियमों और कार्यप्रणालियों का पालन करना होता है और बच्चे इन दिशानिर्देशों को समझने और कार्यप्रणालियों का पालन करने में बहुत अच्छे हैं। इस समझ के कारण वे एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात सीखते हैं—अनुशासन से सफलता मिलती है। हम जो तरीके सिखाते हैं वे बहुत सरल हैं—जैसे मिट्टी को बहुत मोटा या गाढ़ा मत करो, या एक पतली पूँछ को सहारा देने के लिए उसे शरीर के साथ जोड़ना चाहिए। मैं उन्हें समझाता हूँ कि ये तकनीकें क्यों आवश्यक हैं। अगर मिट्टी बहुत मोटी या गाढ़ी हो तो वह अच्छी तरह से नहीं सूखेगी या अगर पतली पूँछ को शरीर के साथ न जोड़ा जाए तो वह टूट भी सकती है क्योंकि वह कमजोर होती है। बच्चे यह अवधारणा आसानी से समझ लेते हैं और बुनियादी भौतिक शास्त्र भी सीखते हैं।

भारत के विभिन्न शहरों में और बंगलौर के हमारे स्टूडियो में कुम्हारी के अनेक शिविर चलाए जाते हैं जो स्कूल के बाद और गर्मियों की छुट्टियों में आयोजित किए जाते हैं। दो घण्टे के विभिन्न सत्रों में अलग–अलग विषय लिए जाते हैं। इन कार्यक्रमों में मैंने अनेक माता–पिता से बात की है जो यह चिन्ता व्यक्त करते हैं कि शायद उनका बच्चा इतनी देर तक इस काम में जुट न पाए, लेकिन होता इसका उलटा है। मिट्टी के प्रति संवेदी प्रतिक्रिया, उसके जिम्मेदार

होने की भावना या शायद अपनी भावनाओं को शारीरिक रूप से या मिट्टी को कोमल–सपाट करने के द्वारा सुस्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता के कारण सभी बच्चे, यहाँ तक कि वे बच्चे भी जो उच्च सक्रियता स्तर वाले हैं, अपने काम से पूरी तरह से जुड़ जाते हैं, उसमें तल्लीन हो जाते हैं। बच्चे निराशा का अनुभव नहीं करते क्योंकि मिट्टी लचीली होती है और उनकी बात मान लेती है।

क्ले स्टेशन में हम सब इस सिद्धान्त को ध्यान में रखकर मिट्टी की कला सिखाते हैं कि उत्पाद की तुलना में प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण है। मैं खोज और सृजन के आनन्द पर जोर देता हूँ। बच्चे अपने हाथों से मग या पेंसिल होल्डर बनाकर बहुत उत्साहित होते हैं। वे यह घोषणा करते हैं कि यह मग उनकी दादी की कॉफी के लिए है या यह पेंसिल होल्डर उनके पिताजी की डेस्क के लिए है। पत्थर मिट्टी की बनी हुई ये चीजें अपनी व्यावहारिक और टिकाऊ प्रकृति के कारण बच्चों को महत्त्व और गौरव का एहसास कराती हैं। कला के सभी रूपों का अनुभव करना बच्चे के लिए महत्त्वपूर्ण है, फिर भी मिट्टी की बनी हुई एक पूर्ण वस्तु/कलाकृति अपनी टिकाऊ प्रकृति के कारण बच्चे के लिए एक विशेष महत्त्व रखती है। जब मैं मिट्टी से बच्चों का परिचय कराता हूँ और देखता हूँ कि वह अपने अद्वितीय गुणों द्वारा बच्चों के विकास में कई तरह से योगदान दे रही है तो मुझे बहुत सन्तोष होता है। जब क्ले स्टेशन ने यह जाना कि बच्चों की उपलब्धि के लिए मिट्टी की कला कितनी मूल्यवान है और बच्चों के स्कूलों में कला के कार्यक्रमों को सीमित करना कितना निराशाजनक होता है, तब उसने मिट्टी की कला का पाठ्यक्रम शुरू करने में



स्कूलों की मदद की। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के साथ काम किया, शिक्षकों को मिट्टी के साथ काम करने का प्रशिक्षण दिया। उपकरणों को खरीदने और व्यवस्थित करने में सहायता दी और स्कूल–स्टूडियो की योजना बनाने और उसे डिजाइन करने में भी मदद की। हम स्कूलों में मिट्टी की कला शुरू करने को प्रोत्साहन देते हैं, भले ही वह छोटे पैमाने पर क्यों न हो। क्योंकि हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि स्कूल के बाद चलाए जाने वाले किसी अन्य कार्यक्रम की तुलना में इस कार्यक्रम से बच्चों के समग्र विकास पर ज्यादा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस दिशा में, हमने अपने अनुभव को इस विश्वास के साथ अपने स्कूल के आउटरीच कार्यक्रमों और अपने स्टूडियो में बच्चों की कार्यशालाओं में साझा किया है कि बच्चों के विकास को मजबूत बनाने में मिट्टी एक अनिवार्य तत्व है।

__सुमन्त सम्पत__ एक सिरामिक कलाकर और क्ले स्टेशन आर्ट स्टूडियो प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक हैं। उन्होंने अमेरिका, इसराइल और भारत के कई स्कूलों और स्टूडियो में पढ़ाया है और कार्यशालाएँ संचालित की हैं। सुमन्त क्ले स्टेशन में उत्साही कलाकारों के संगठन का एक हिस्सा हैं, जिनका सतत प्रयास है मिट्टी के चिकित्सीय और रचनात्मक आनन्द को हर किसी के साथ साझा किया जाए। उनसे sumanth@claystation.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

__अनुवाद:__ नलिनी रावल